

॥ श्री योगेश्वर एव संपूर्ण जुल ॥

आशा सन्काधि

2590

ASHA ARCHIVES

ॐ नमो श्रीमहायागश्च वायव्य
यत्कुरुतीदवाय ॥ श्रीमद
कालत्रयनीलकान्तिगावकु
कुर्येकत्रयस्मन्मन्त्रमाभि
हूकालत्रयस्मिन्नायमोविष्क

ॐ नमो श्रीकालाग्ध्यवा ॐ नमो श्री
मद्विषमसंघगुह्यपुस्तिसुत्र
यान्कालिगरवज्रध्वंमकार्द्विचक्र ९
वान्वंमयाद्यादिगुरुस्थद्वयस्य
माह्व्यमूर्वनपवज्यवागमनवा

१ गद्यद्वीकृष्यवज्रमार्गद्वीकमलमसूर्यकदाधिविकनिष्यंतगामाशुलयद्वीका
वाधियथास्थाययद् ॥ ८ ॥ निरुद्धयमाविकुरुमधुलत्रयविधि ॥ कदाच्यंनत्रयूर्यपूर्व
चधुमधुलककावं ॥ सीत ॥ ॥ दक्षिणमूलस्थमकावपीकं ॥ पश्चिममूलस्थकावत्रल
॥ उद्धवहविकदकावंमूलस्थ ॥ अग्नयादिवदुर्ध्वकावचलमधुलहं ॥ यथाक्रमंजामद
वृद्धपुरुववदुष्टय ॥ ॥ सीतकुरुवक्रहविकवर्ध ॥ वाक्कयूर्यपूर्वदक्षिणादिवा

प्रयत्ननिवाळूनि ॥ ॐ श्रुत ॥ वावडुस्यसंस्त्यरुद्रस्यसीकवल्कहविगवर्धनकाहावडु
 स्यसंसीकवर्धवधुमधुलस्थधयागित ॥ ॥ ॐ श्रुत वचडुस्यसंस्त्यरुद्र ॥ वाकतावासा
 नूरासाधस्वविशयासहविलीयकुडवयंवडुसंस्त्यरुद्र ॥ वाकतठयवधुविधानाव २
 दगात्मकीकवूष्मासदितायकाचर्विकादियागिनीवडुस्यसंस्त्यरुद्र ॥ अस्यांतवपटकाहावधुप
 नू ॥ वाकतवडुवचर्विकावसंस्त्यरुद्रयकि ॥ ३ ० हराजकवूष्माकाह ॥ वाकिह्रमधसंस्त्य

लज्जहहिमाह ॥ वाकथावडुवावाहिनचउमात्रयवाजिअराडव ॥ ३ ० हराजविहंआ
 उल ॥ वाकथावडुसंस्त्यरुद्रमिनाअनिमंदिअरुद्रमिथुना ॥ ३ ० हराजलाअरुद्रमिथुना ॥
 कथावडुसंस्त्यरुद्रमीकांनूडुआरुद्रमिथुनाहाविडिवावाहिमहावराअनिमकि ॥ ॥ ॐ निडिअरुद्र
 हयमात्रिकडुकिगीनीसमनंरुद्रमवडुसंस्त्यरुद्रविधि ॥ वाउंआरुद्रनूडुवाअरुद्रवडुसंस्त्यरुद्र
 कवर्धवल्कहाकाकावडुसंस्त्यरुद्रविदवर्हिं ॥ ३ ० हराजकवूष्माकाह ॥ वाकिह्रमधसंस्त्य

मरुत्सुंयामयत्नं वदनं॥ ॥ दक्षिणपार्श्वे चक्रवर्त्तकहिंसाविधौ॥ ॥ वामरुजं च त्रयम्
 कपालध्वनिनै॥ ॥ ओं दिनडिगिति मनु मूत्रं वं॥ ॥ कलादक्षिणमकारपविनतं॥
 पिबुनयेमात्रिपीकवर्ध॥ मूलपीकंदक्षिणमिहं वामरुत्सुं वदनं॥ ॥ दक्षिणरुजं च त्रयम् ४
 अकारहिंसाविधौ॥ ॥ वामरुजं च कपयन्नकपालध्वनिनै॥ ॥ उं च त्रयं मिमि मनु मूत्रं वं॥
 ॥ कुरु यश्चिममकारेन वा गयमात्रि॥ ॥ वाहिकवर्ध॥ ॥ मूलवत्कंदक्षिणरुत्सुं वदनं॥

मरुत्सुं वदनं॥ दक्षिणकवचत्रयपन्नरवअकारहिंसाविनं॥ वामपार्श्वे चक्रवर्त्तकपालध्व
 निनं॥ ॥ ओं आगालिमिमि मनु मूत्रं वं॥ ॥ कुरु उं च त्रयं कारपविनतं मीष्य
 यमात्रि॥ मनु॥ चक्रवर्ध॥ ॥ मूलहविहदक्षिणरुत्सुं वामपीकवर्ध॥ दक्षिणरुजं
 च त्रयं अकारहिंसाविनं॥ ॥ वामरुजं च कपयन्नकपालीनं॥ ॥ ओं यहाधमिमि॥ ॥
 मनु मूत्रं वं॥ चक्रवर्त्तकपालध्वनिनं॥ ॥ वाहिकवर्ध॥ ॥ मूलवत्कंदक्षिणरुत्सुं वदनं॥

तशाः। यत्नान्तरसहा॥ वातनास्यं न वयं यत्नान्तरसहा॥ वातनास्यं न वयं यत्नान्तरसहा॥
 यमालिप्तदृशी॥ ॥००॥ किञ्चिद्दुष्टयमाविश्वज्जयदलविधिः॥ ॥ मेषी खकावां
 वा० माह॥ वक्तिमिमुमुक्षुवन्ति पश्यन्॥ ॥ कनाने सन्नातकावधवज्जवाहाहि॥ ॥
 वयमावि सन्ति मल्लघानवदना कन्या॥ स्मिकांशव वक्तिमिमुमुक्षुवन्ति पश्यन्॥ ॥
 कन्यावायुव्यदाकादधवज्जसर्ववक्तीव नैवर्ध्मे शोरायमावि सन्ति मल्लघानवदना कन्या॥

वा० माह॥ वक्तिमिमुमुक्षुवन्ति पश्यन्॥ ॥ कनाने सन्नातकावधवज्जवाहाहि॥ ॥
 मावि सन्ति मल्लघानवदना कन्या॥ स्मिकांशव वक्तिमिमुमुक्षुवन्ति पश्यन्॥ ॥
 वंति पश्यन्॥ ॥ कनाने सन्नातकावधवज्जवाहाहि॥ ॥
 वक्ष्यमू० कन्यामावि सन्ति मल्लघानवदना कन्या॥ स्मिकांशव वक्तिमिमुमुक्षुवन्ति पश्यन्॥ ॥
 कन्यावायुव्यदाकादधवज्जसर्ववक्तीव नैवर्ध्मे शोरायमावि सन्ति मल्लघानवदना कन्या॥

माविग वायवचकुसुमनयूजिष्कवकांकिनंदधु॥ वाँदधुधुगिगिमकुमव्वं
 कविग वाँययधुगिगिमकु॥ मूचवमं॥ कताउरुववाप्रवाकावपविनमंरवअयमाविन्
 व्यायमाविमदसिष्वायाग॥ ॥ सकलमाधुल्यदवगा॥ ॥ ॐ निश्रीकृष्णयमावि ३
 तंकुमधुलस्त्रयवसहूकविधि॥ ॥ कतावाअपूरकाशचडुय॥ ॥ पस्थितन
 यानिर्वविधेदलकमलस्थम्वास्तनस्थानि॥ ॥ चत्वारिकयातानियंचासुहपविपू

धुनिष्वायाग॥ ॐ निस्वचकुसुमनयूजिष्कवकांकिनंदधु॥ वाँदधुधुगिगिमकुमव्वं
 ऊँ॥ वाँआ॥ ॐ॥ ॥ ॐ निश्रीकृष्णयमाविमकुवाअचकुविधि॥ ॥ कदमू
 धुल॥ सावमधुलयातांवकुवादि॥ ॥ ॥ वाँवकुवकु॥ वाँवकुआग॥ वाँवकु
 घाघा॥ वाँवकुजिह्वा॥ वाँवकुकायः॥ ॐ निमकुधाधिधिनिष्कृम॥ कथागिलसिच
 लुस्थकुमाकावकं॥ ॐ वक्तृपमस्थआ॥ काववक्तृ॥ ॥ कदिवक्तृमूयस्थकृ

॥ ह्रूं का वं का य वा कु वि डा त्म कं य ध्य क् ॥ ॥ ग क ह उ स्त रु द्वी ऊ व र भी ना ण का द ङ स्थि ता
 न्म स वं सं च्छां त्मं पू ष्छ त्म रि षी च्छ रु मां स र्व त्म ग का ङ्ग ति या र्थ य क् ॥ ॥ ग क ह र्म य मा
 रि वू षा य न्न य च्छ म्म रु क्क ल लो व हि वि च्छा र्म ॥ ग क ह र्म क ल वा ष्छा र्म क व म लो ष ग
 मा न्द दी ष्म मा नं ॥ वा ष्छा र्म क व मां त्मा नं इ ष्म मा षु व या नां सि ल्म सि च्छ क ल सं म्म य
 क् ॥ ॥ ग क य थ ॥ म षु ले ष्म व स्य अ ष्म य ॥ ॥ मा ह य मा वि वे री च न ॥ ॥ पि शु न

ऊ मा री च्छ सं म्म व ॥ ॥ वा रा य मा वि व मि ता र्म ॥ ॥ वू ष्या य मा वि व मा य सि दि
 ॥ ॥ वि रु च्छि का या वे री च न ॥ ॥ व रु वा वा ष्छ अ रु य ॥ ॥ व रु स व मा य
 अ मि ता र्म ॥ ॥ व रु गो षा अ मा य सि दि ॥ ॥ मं ग ल य मा वि व क्क र्म ॥ ॥ व
 षु य मा वि वे री च न ॥ ॥ य य य मा वे र मि ता र्म ॥ ॥ व रु य मा वि व मा य सि दि ॥
 ॥ मि ति ॥ श्री रु ष्म य मा वि रु ष्म यं रु व वा ष्छा रि ष क वि धि ॥ ॥ रु द नू स्त दि ऊ व र्म

नमो नमो भुलमानियसंयुक्त ॥ ॐ मुं डल ॥ ॐ दं सुं डं ॥ ॐ ययं ॥ ॥
 ॐ किमनुवदु सुयन आकृष्य वस्थव वावगीकृत्य ॥ समयमधुलयालकलीलिखं
 विविक्तयत् ॥ ॥ नकायं कावयविनरय ॥ ॥ कवायूमधुलाहियि ॥ ॥ वं कावय ॥
 विनगाग्निमेधुलमापिकसिक्त ॥ कावयविनरय ॥ कपालविनरय ॥ ॥ गदहनं ॥ ॥
 ॐ कावाधिष्ठिं डविहं य ॥ ॥ ॐ कावाविनरविनिर्मनय ॥ ॥ नानां सर्वदधानां

हृदयामरुमा नीयकृष्य वस्थ ॥ ॐ कि कृतं ॥ ॥ यंचामरु ॐ आहं ॐ कि अकृतं
 याधिष्ठिं ॥ सर्वदधानां हं कावयनियत्रवत् ॥ कववकृतवधि नत्तिकयामरवयवि
 द्ययं ॥ ॥ नरेस्थिरीहं नं वं डवकृतवत् ॥ चिकामरवनगीकृत्य कावयत् ॥ ॥ ॐ ॐ
 ॐ ॐ कि दयमा विगुन्रममहाव ॥ ॥ हउडु हयकृ विहामिगुवृह ॥ ॐ कोहमहाव ॥
 ॥ नकावकृवाहिमरवन ॥ ॥ य ॐ नचनकयि ॥ ॐ सग्नमत्रया ॥ ॥ कि

हिर्हृजधकाहमधश्च हउ हूँ वज्रं ल॥ ॥ कलावजसवस्वकिमूरवन॥ ॥ काला
 खर्वयवानजवहृविहमिमसिक्क॥ ॥ वज्रसवमव्विहमसिधश्चहिउहृ॥ ॥
 महमह॥ ॥ कलागोत्रीमूरवन॥ ॥ ॐ ह्रीं सैं कुं ह्रीं ह्रीं उहिकिहृमूहाकंति
 ॥ ॥ कलूकाहृशउडुहृऊगपऊउश्चन॥ ॥ ॐ मिथी हृहृयमाविर्मऊगुक्कव
 कविधि॥ ॥ ॐ नगीतिकयामल्लसंयूयमुनि॥ ॥ नडकारय॥ ॥ नमाहव

जस्वरावसुत्वयमाविशकिहिघन॥ सर्ववज्रसयसास्तकायवज्रनमास्तु॥
 पिबुवजस्वरावसुत्वयमाविशकिहिघन॥ विह्वज्रपतिकासवत्ववजनमास्तु॥
 ॥ वागावजस्वरावसुत्वरागाधमाकवपर॥ सर्वघायवाग्रावज्जनमास्तु॥
 ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं वावजस्वरावसुत्वयमाविसर्वकर्मिककायवज्रपतिकाशरवज्रया
 तिनमास्तु॥ ४ ॥ सर्ववज्रस्वरावसुत्वसर्ववज्रकसंग्रह॥ सर्ववज्रववाग्राय

माछलगनमामुर्गवा ५ वा नूनिमहायोगवा ॥ नूनिषीकृष्टयमानिकर
महायोगसंगपटलसमाध ४॥ ॥ यथामायादिभ ॥ रुद्रसम्बन्ध
२२ टिमिषायह्मण्ड ३ सद्विषयकादिनइलहरं ४॥

2590